भारत की कम्युनिस्ट पार्टी (माओवादी)

केन्द्र कमेटी

आह्वान

ब्राह्मणीय हिन्दू फासीवाद के खिलाफ एकताबद्ध होकर संघर्ष करेंगे!

हिन्दू धार्मिक उन्माद के खिलाफ कार्यवाही सप्ताह(एक्शन वीक) 6 से 12 दिसंबर तक मनाएंगे!

12 दिसंबर को भारत बंद सफल बनाएंगे!

विगत तीन वर्षों से भारत में कट्टर ब्राह्मणीय फासीवादियों का शासन जारी है. देश के भीतर दिन ब दिन भगवा आतंकवाद का खतरा बढ़ रहा है. दुष्ट हिन्दुत्व गिरोहों के हमलों से कश्मीर से लेकर कन्याकुमारी तक उथल–पुथल हो रहा है. धार्मिक अल्पसंख्यकों, दलितों, आदिवासी जन समुदायों; लोकतंत्रवादियों, धर्मनिरपेक्ष ताकतों; क्रांतिकारियों, वामपंथियों, सच्चे देशभक्तों, पत्रकारों, महिलाओं और छात्रों इत्यादि पर आए दिन ब्राह्मणीय फासीवादियों के हमलें जारी हैं. मसजिद, गिरिजाघर, आदिवासियों के पूजास्थल इत्यादि गेरुआ आतंकी गिरोहों का निशाना बन रहे हैं. ऐसे भीभत्सपूर्ण माहौल में ब्राह्मणीय फासीवादी ताकतों को हराए बिना देश के भीतर जनवाद या सच्ची धर्मनिरपेक्षता असंभव है. अतः यह वक्त है कि तमाम जनवादियों, लेखकों, कलाकारों, पत्रकारों, बुद्धिजीवियों, धर्मनिरपेक्षवादियों, महिलाओं, छात्रों, बेरोजगार युवाओं, कर्मचारियों, वाम मित्रों आदि को एकजुट हो फासीवादी ताकतों के जुल्म–अत्याचारों का कड़ा मुकाबला करते हुए उन्हें मात दें तथा उनके काले कारनामों का न सिर्फ बेनकाब करें बल्कि उन्हें अपना औकात सिखावें. आईये, हम सब एकजुट होकर संघर्ष करेंगे. हमारी पार्टी तमाम देशवासियों, खास रूप से धार्मिक अल्पसंख्यक, दलित, आदिवासी, छात्र, महिला समुदायों के साथ–साथ तमाम धर्मनिरपेक्षवादियों व बुद्धिजीवियों से आह्वान करती है कि हिन्दू धार्मिक उन्माद के खिलाफ 6 से 12 दिसंबर तक कार्यवाही सप्ताह(एक्शन वीक) तथा 12 दिसम्बर 2017 को हिन्दू फासीवाद विरोधी कार्यवाही सप्ताह में सक्रियता से भाग लेकर भारत बंद को सफल बनाने का

6 दिसंबर 1992 के दिन भारत के धार्मिक समरसता के इतिहास में धार्मिक विद्वेष भड़काकर दंगा फसाद के द्वारा भीषण ताण्डव मचाने का दिवस के रूप में अंकित है. ठीक 25 साल पहले इसी दिन देश के भीतर हजारों हिन्दुत्व गुण्डा वाहिनियों व कट्टर धार्मिक मतावलंबियों का झुण्ड, जिसे करसेवक का नाम दिया गया, की अगुवाई में अयोध्या में लगभग 5 घण्टें तक बाबरी मसजिद ढहाने का भीषण ताण्डव मचाया गया है. 462 साल पहले तथाकथित राम मंदिर को गिराकर बाबरी मसजिद बनाने का मनगढंत तथ्य के आधार पर मुसलमानों के पूजा स्थल को गिरा दिया गया. इस विध्वंसकाण्ड के बाद देश भर में भड़के दंगों के मद्देनजर 213 जगहों पर कर्फ्यू लगाना पड़ा. लगभग 10 करोड़ जनता इन दंगों से प्रभावित हुए. हिन्दू फासीवादियों की मातृसंस्था राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ तथा उससे संबंद्ध संस्थाओं खास तौर पर विश्व हिन्दू परिषद, बजरंगदल के करसेवकों ने हाथों में त्रिशूल थामकर इन दंगों की अगुवाई किया था. पिछले ढाई दशकों से यह आग बुझने का नाम नहीं ले रहा है. अब कट्टर हिन्दुत्व शख्स योगी आदित्यनाथ उत्तरप्रदेश का कमान संभालने के बाद वहां की जनता मुख्य रूप से मुसलमान आबादी आतंक के साये में जीने पर मजबूर हुई है. ऐसे परिप्रेक्ष्य में इलाहाबाद उच्च न्यायालय द्वारा 5 दिसंबर 2017 को अयोध्या विवाद पर फैसला सुनाने की प्रक्रिया शुरू होने जा रहा है. देश के न्याय प्रणाली से भलीभांति वाकिफ नागरिक संभावित फैसले के बारे में आसानी से अनुमान लगा सकेंगे. साध्वी प्रज्ञा ठाकुर जैसे खूंखार अपराधियों को निर्दोष बताते हुए बरी कर दिया जाता है. दूसरी तरफ 2002 गुजरात दंगों से पीड़िता बिल्किस बानो मामले में दोषियों को कठोर सजा सुनाने में देश के सर्वोच्च न्यायालय अपनी असमर्थता जताता है. भूतपूर्व प्रधान मंत्री अटल बिहारी वाजपेयी के शासनकाल में प्रारूपित हिन्दू अनुकूल न्याय व्यवस्था

से वाकिफ जानकारों को उच्च न्यायालय के संभावित फैसले से ताज्जुब नहीं करेगा? इतना तक वे अंदाज लगा सकेंगे कि संभावित फैसला देश के भीतर धार्मिक कट्टरता को बढ़ावा देने वाली आग में घी का काम करेगा.

गोपनीय ऐतिहासिक तथ्य यह खुलासा दे रहे हैं कि असल में दिसंबर 1949 में ही धार्मिक विद्वेष का बीज बोया जा चुका है. शासकीय प्रणाली के साथ मिलीभगत से वहां गुप्त रूप से मूर्तियों को प्रतिष्ठित करने का श्रेय सबसे पहले कांग्रेस को जाएगा. चुनावी वोट बैंक राजनीति के तहत पहली बार 1986 में पूजा के लिए कांग्रेस शासन काल में अनुमति दी गई थी. इसके 6 साल बाद बाबरी मसजिद विध्वंस भी केन्द्र में कांग्रेस के शासनकाल में ही हुआ था. शुरू से ही कांग्रेस द्वारा हिन्दुओं को बहला–फुसलाने के लिए अपनाई गई कुटिल नीतियां, आज के भगवा फासीवादी ताकतों के विध्वंसकारी नीतियों से और बढ़ावा मिल रहा है. देश के प्रथम प्रधानमंत्री नेहरू को गांधी से प्राप्त हिन्दू धार्मिक शिक्षा से यह पुष्टि हुआ था कि भारतीय समाज पर हावी होकर फासीवाद को अमल करने की ताकत मुसलमान धार्मिक कट्टरता में नहीं है. वह काम मात्र हिन्दू धार्मिक कट्टरता ही कर सकेगी. इस प्रकार देश में धार्मिक कट्टरता की वर्तमान तस्वीर खींचने में कांग्रेस की भूमिका को नजरंदाज नहीं किया जा सकता.

देश के भीतर नई–नई समस्याओं को उत्पन्न करके धार्मिक सामंजस्य को क्षतिग्रस्त करने दंगा–फसाद भड़काने का काम बाबरी मसजिद काण्ड के पहले और बाद में भी हुआ था. 1947 में देश के बंटवारे के समय लाखों लोगों की खून से देश की सरहदें लथपथ हो गईं थीं. उसके पश्चात अहमदाबाद–गुजरात (1969), भिवंडी(महाराष्ट्र), तेल्लच्चेरि (केरलम–1971), जमशेडपुर (झारखण्ड–1979), भागलपूर(बिहार), मेरट(1980, उत्तर प्रदेश), तमिलनाडू(1982), गुजरात(2002), कंदामाल(2008), उत्तरप्रदेश(2013) आदि जगहों पर व्यापक पैमाने पर भड़के इन दंगों में अपार जान माल की क्षति हुई. आज देश के मुसलमान आबादी पल–पल डर के साये में असुरक्षा के माहौल में गुजारा करने पर मजबूर है. 2014 में हिन्दू फासीवादियों द्वारा सत्ता ग्रहण करने के बाद अखलाक से लेकर हाल के पहलूखान (राजस्थान), लोकगायक अहमद खान तक कइयों मुसलमान भाईयों की कत्ल हिन्दुत्व गिरोहों ने निर्ममता से की. धर्मनिरपेक्षता की अवहेलना करने वाली हित्दुत्व गिरोहों के तमाम क्रियाकलापों का कड़ा मुकाबला करना होगा.

हमारे देश में सदियों से पैठ जमाई सीढ़ीदार ब्राह्मणीय घृणित वर्ण व्यवस्था में दलितों की जिंदगियां अवसाद की अवस्था में है. वे समाज के बुनियादी वर्ग के श्रमजीवी हैं. वर्ण व्यवस्था के प्रणेता मनु ने यह बात पहले ही बता चुका था कि बगैर उनके श्रम उच्च वर्गों व जातियों का अस्तित्व ही नहीं रहेगा. उसने कहा था कि यदि शूद्र और वैश्य(उस जमाने के कृषक) यदि अपना पेशा छोड़ देंगे तो दुनिया उलट पुलट हो जाएगा. शोषणकारी व्यवस्था में दलित समुदाय, सवर्णों और शोषक वर्गों की लूट के शिकार हो रहे हैं. सत्ता हस्तांतरण के बाद भी संविधान के कसम पर उनका दर्जा अछूतों की श्रेणी में बरकरार है. आज भी वर्ण के नाम पर उन्हें प्रताड़ित व अपमानित किया जा रहा है. 'आजाद' भारत में उन पर हंतक हमलें कभी थमे नहीं हैं. बिहार के बेल्ची में 11 दलितों को जिंदा जलाना, तमिलनाडू के किल्वेनमणि(1968) के जमीन के मुद्दे पर हुई झड़पों में 45 दलितों का नरसंहार, उसके बाद बथानीटोला (बिहार), चुण्डूर (आन्ध्र प्रदेश) से खैरलांजि (महाराष्ट्र), हाल के जीवखेडा(महाराष्ट्र) तक सैकडों दलित, सवर्णों की नृशंसता का शिकार हुए. 2014 में मोदी सत्ता में आने के बाद ऊना(गुजरात) से लेकर नालंदा जिला आजादपुर के नाई महेश ठाकुर (बिहार) तक हत्यांए, अत्याचार और अपमानों का सिलसिला जारी है. अपर मनु प्रधान मंत्री मोदी ने वर्ष 2010 में ही 'कर्मभूमि' नाम से (मोदी स्मृति) एक पुस्तक लिखी थी. हिन्दुत्व जाति व्यवस्था की निष्ठुरता के भुक्तभोगी शोषित जनता के पक्षध ार डॉक्टर भीमराव अंबेडकर द्वारा दी गई चेतावनी की आज के परिप्रेक्ष्य में अत्यंत प्रासंगिकता है. ''जब हिन्दुत्व देश के बागडोर संभालेगा तब सारे देश में भयंकर संकट उत्पन्न हो जाएगा. हिन्दुत्व, कथनी में कुछ भी कहे लेकिन स्वेच्छा, समानता, भातृत्व के लिए वह बहुत बड़ा खतरा है.'' आज हमारा देश उन फासीवादी ताकतों के शिकंजे में कसा हुआ है. अपने पुरखों द्वारा विरासत में प्राप्त अनुभवों के मद्देनजर फासीवादी ताकतों को हराना हमारा और आपका, सबका फर्ज बनता है.

देश के उच्च शिक्षण संस्थाओं व विश्व विद्यालयों में भी ब्राह्मणीय गिरोह हावी हो गईं हैं. भारत के शासक वर्गों द्वारा 1991 से अपनाई गई साम्राज्यवाद परस्त वित्तीय नीतियों के चलते शिक्षा गरीबों के लिए दूभर बन गई है. अब मोदी एण्ड कंपनी के शासनकाल में पूरी शिक्षण प्रणाली का ही सौ प्रतिशत निजीकरण के बाद मध्यम वर्गीय अवाम के लिए बच्चों को पढ़ाने तक मुश्किल हो गया है. प्रतियोगिता परीक्षाएं छात्रों के लिए जानलेवा खतरा साबित हो रही हैं. अकेले आन्ध्र प्रदेश में 1995–2000 के बीच 1400 छात्र बलात मरण का शिकार हुए हैं. अक्तूबर 2017 एक महीने के भीतर दोनों तेलुगु भाषाई राज्यों में 50 छात्र बलात मरण के शिकार हुए हैं. विख्यात शिक्षाविद चुक्का रामय्या इस पर खेद जताते हुए कहा कि, ''इसका पाप कार्पोरेट शिक्षण संस्थाओं के झोले में जाएगा.'' एक तरफ शिक्षण संस्थाओं में शिक्षा का

व्यापारीकरण तथा दूसरी तरफ देश के विख्यात विश्व विद्यालयों के दलित छात्रों, प्राद्यापकों पर ब्राह्मणीय हिन्दुत्व गिरोंहों के हमलों में काफी तरक्की हुई. आज देश की तमाम शिक्षण संस्थाएं गेरुआई छत्रछाया में पल बढ़ रहे हैं. पाठ्य प्रणाली का ब्राह्मणीकरण हो रहा है. चेन्नै के आईआईटी, पुणे स्थित एफटीआईआई, हैदराबाद केन्द्रीय विश्व विद्यालय, जादवपुर विश्व विद्यालय दिल्ली जवहर लाल नेहरू विश्व विद्यालय, वारणासी (काशी) स्थित बीहेचयू, जोधपुर विश्व विद्यालय से लेकर हरियाणा के महेन्द्रगढ महा विद्यालय में महाश्वेतादेवी के नाटक मंचन के बाद छात्रों को तंग करना आदि तक को देखने पर यह पता चलेगा कि देश के कोई शिक्षण संस्थान, महा विद्यालय व विश्व विद्यालयों में भगवा आतंक के चलते शांतपूर्ण माहौल में शिक्षा प्राप्त करना मुश्किल हो गया है. इतना ही नहीं प्रगतिशील मेधावी छात्र रोहित वेमुला आत्महत्या के बतौर उनकी हत्या गेरुआ गुण्डा गिरोंहों ने की है. 14 नवंबर 2016 को जेएनयू छात्र नजीब का गायब होना इसी धार्मिक उन्मादी राजनीति का अगली कड़ी है. दिल्ली जेएनयू छात्र नेता कन्हैया कुमार पर प्रताड़नाएं असहनीय हो चुकी हैं. ऐसे माहौल में तमाम छात्र युवाओं को चाहिए कि जुझारू आंदोलनों के जरिए ब्राह्मणीय हिन्दुत्व फासीवाद का कड़ा मुकाबला देने वाली सामाजिक प्रेरक शक्तियों के रूप में उभरना होगा.

अपने न्यायपूर्ण व जायज मांगों को लेकर देश के भीतर अलग–अलग राष्ट्रीयताएं दशकों से लड़ रही हैं. भारत के लुटेरे शासक वर्ग उनके न्यायपूर्ण आंदोलनों व जायज आकांक्षाओं को विघटनकारी व आतंकी कार्रवाईयों के रूप में चित्रित करते हुए उन पर अत्यंत पाशविक दमन चला रहे हैं. कश्मीरी अवाम बलिदानों के राह पर अपना जंग जारी रखी हुई हैं तो मोदी एण्ड कंपनी इसे पाकिस्तान प्रायोजित विघटनकारी कार्यवाहियों के रूप में पेश करते हुए भारत सेना के लौह पैरों तले कुचलने पर उतर गया है. लेकिन आज कश्मीर घाटी, कश्मीरी राष्ट्रीयता मुक्ति आंदोलन का विस्फोटक केन्द्र बन कर खड़ा है. कश्मीर के अवसरवादी व दलाल राजनीतिक नेता फारुक अब्दुल्ला को यह कहने पर मजबूर होना पड़ा कि ''कश्मीर जन उभार की ज्वालाओं को कोई बुझा नहीं सकेगा.'' इस वक्तव्य का मूल श्रेय मोदित्व ताकतों को जाएगा. भारत सेना द्वारा मणिपुर में अमानवीय नरसंहार के बावजूद वहां की जन मुक्ति सेना और मणिपुर माओवादियों का कड़ा प्रतिरोध जारी है. अखण्ड भारत का नारा देने वाले ब्राह्मणीय ताकतों के दुष्ट सपनों को नाकाम करने कश्मीरी युवा शस्त्रों से लैस हो रहे है.

देश के भीतर पिछले तीन सालों में बढ़ी हिन्दू फासीवादियों के दमनकारी कार्रवाईयों का निषेध करते हुए बुद्धि जीवियों, लोकशाहियों, धर्मनिरपेक्ष ताकतों, इतिहासकारों, लेखकों, कलाकारों, वैज्ञानिकों सहित विभिन्न क्षेत्रों में नामी व प्रतिष्ठित भारत के नागरिक अपने पुरस्कारों को वापस कर दिया. देश के भीतर हिन्दुत्व ताकतों की ज्यादतियों पर उंगली उठाने वाले प्रगतिगामियों की हत्या भगवा आतंकी गिरोहों द्वारा की जा रही है. परसों एक दाभोल्कर, गोविंद पानसरे कल एक कलबुर्गी उनके खून के धब्बे अभी धुले नहीं कल यानी 5 सितम्बर 2017 को गौरी लंकेश की हत्या कर दी गई. ''हमारे देश की राजनीति में धर्म अहम भूमिका निभा रहा है.'', ''धर्मनिरपेक्ष भारत संवैधानिक राजनीति से धर्म को अलग करके देखना है.'' अपने हिन्दू विरोधी विचारों को गौरी अपनी पत्रिका संपादकीय में लिखी थीं. गुरमीत राम रहीम सहित के साथ मोदी सहित हरियाणा विधायकों के फोटो काण्ड का उन्होंने उजागर किया. गोरखपुर अस्पताल में मासूम बच्चों की मौत को भाजपाई सरकार का नरसंहार करार दी. इस प्रकार वे भाजपाईयों के लिए गले की हड्डी बनी थी, इसलिए उनकी बलि चढ़ा दी गई है. माओवादियों द्वारा उनकी हत्या करने का झूठा प्रचार करने लगे. हाल में हैदराबाद के समाजशास्त्री, लेखक कंचा अयलय्या ने ''सामाजिक स्मग्लर बनिया'' के नाम से पुस्तक लिखी थी, जिसके बहाने जाति का आधार बनाकर वैश्य संगठनों ने बवाल मचा दिया. भाजपाई सांसद टी जी वेंकटेश तो धमकियों पर उतर पड़े. धार्मिक उन्मादियों द्वारा उनकी हत्या करने की धमकियां दी जा रही है. हिन्दुत्व ताकतों द्वारा छत्तीसगढ़ के नामी पत्रकार विनोद वर्मा को फर्जी सीडी मामले में फंसाकर उन्हें जेल भेज दिया गया. वाक, सभा, पत्रिका की आजादी को सर्वोच्च मान्यता देते हुए आवाज उठाने वाले प्रत्येक नागरिक से हमारी पार्टी अप्पील करती है कि हिन्दुत्व विरोधी बुद्धिजीवियों पर जारी तमाम हंतक हमलों की कड़ी निंदा करें.

देश के भीतर ब्राह्मणीय हिन्दुत्व फासीवादी ताकतों के इन फासवादी कार्यवाहियों के खिलाफ कमर कसने का मतलब होता है उनके साम्राज्यवाद परस्त वित्तीय व राजनीतिक नीतियों को हराना. अलग–अलग तबकों व समुदायों के लोग कई समस्याओं से जूझ रहे हैं. भारतीय जनता पार्टी से संबंद्ध श्रमिक संघ, भारतीय मजदूर संघ तक को भी आखिरकार 17 नवंबर को सड़कों पर उतरना ही पड़ा है. किसानों की आत्महत्याएं यथावत जारी हैं. महाराष्ट्र, मध्यप्रदेश, तेलंगाना, उत्तरप्रदेश और तमिलनाडु सहित अनेक राज्यों के किसान बंदूकों की गोलियों से भी न डरते हुए मिलिटेंट आंदोलनों में उतर रहे हैं. 20 नवंबर को किसान मुक्ति संसद के बैनर तले हजारों किसानों ने दिल्ली में विशाल मोर्चा आयोजन करके सरकारी नीतियों की भर्त्सना की. शासकीय कर्मचारियों का हड़तालें जारी हैं. तथाकथित ''विकास'' नमूने

से एक तरफ लाखों संख्या में श्रमिक बेरोजगार हो रहे हैं, तो दूसरी तरफ आधारभूत संरचना के माध्यम से लाखों नौकरियां देने जैसे झूठे आश्वासनों द्वारा लुटेरे शासक अपने शोषणकारी प्रवृत्ति को खुद बेनकाब कर रहे हैं. ऐसे हालात में मोदी 2022 तक नव भारत का निर्माण, शायनिंग इंडिया के राह पर दिवास्वप्न दिखाते हुए जनता को दिशाभूल करने लगा. एक तरफ विमुद्रीकरण और आम आदमी के लिए असहनीय बोझ बनी जीएसटी कर प्रणाली से देश के भीतर खलबली मची हुई हैं तो दूसरी तरफ 'विकास पथ में भारत' का दंभ भरते हुए मोदिस रेटिंग को बढ़ा चढ़ाकर पेश किया जा रहा है. गांधी, दीनदयाल से जोड़कर लोहिया को कंधों पर उठाते हुए देश की पुरोगति का दिवास्वप्न दिखाते हुए मोदी जनता को उल्लू बनाने का नाकाम प्रयास कर रहा है.

अयोध्या में जहां एक ओर असंतोष भड़क रहा है दूसरी तरफ उनके पार्टी के नेता व विधायक संगीत सोम और अनिल विज ताजमहल पर बेतुकी बयानबाजी पर उतरे हैं. पिछले तीन सालों से हिन्दू संत, साध्वी व स्वामी–मौके मौके पर बयानबाजी करते आ रहे हैं. इनके ये बयान कभी भी सच होने की आशंका देश पर मंडरा रहा है. ऐसे में हमारी पार्टी ब्राह्मणीय हिन्दू फासीवादियों के खिलाफ तमाम पुरोगामी व ब्राह्मण विरोधी ताकत एकजुट होकर संघर्ष पर उतरने का आह्वान देती है.

जन छापामार सेना के योद्धाओं!

अपनी पार्टी हर साल 2 से 8 दिसंबर तक पीएलजीए स्थापना सप्ताह मनाती है. इस वर्ष सरकार की नई रणनीति समाधान को हराने केन्द्रीय सैनिक कमिशन के आह्वान के मद्देनजर ''एक्शन वीक अगेनेस्ट हिन्दू फासिजम'' 6 से 12 दिसंबर तक पालन करें तथा उसे सफल बनाने सक्रियता से शामिल हो जाएं. इस देश के शोषित जनता की सेना पीएलजीए उन्हें फासीवादियों के हमलों से बचाने कमर कसकर तैयार हो जाए उनके सक्रिय सहयोग से ही पीएलजीए अपने लक्ष्य पूरा कर पाएगी. समाधान रणनीति को हरा सकेगी. देश के भीतर प्रगतिशील जनवादी व आदिवासियों के हितैषियों के भरपूर मदद से ही पूर्व में सल्वाजुडुम, सेन्द्रा जैसे सरकार प्रायोजित श्वेत मिलिशिया के फासिस्ट हमलों तथा आपरेशन ग्रीन हण्ट के दो चरणों को हरा सकें. इस देश में ब्राह्मणीय फासीवादी ताकतों के हमलों में जान गंवाये प्रगतिशील, जनवादी, धर्मनिरपेक्ष ताकतों के बलिदानों को ऊंचा उठाते हुए उनके सपनों को साकार करने एक्शन वीक को सफल बनावे.

- **6 से 12 दिसंबर तक एक्शन वीक अगेनेस्ट हिन्दू फासिजम सप्ताह को सफल बनावें!**
- **12 दिसंबर को भारत बंद सफल बनावें!**
- **गांवों, कस्बों व शहरों तक अलग–अलग तबकों की जनता के साथ मिल जुलकर जुलूस, संगोष्ठि, आम सभाओं का आयोजन करें!**
- **हिन्दू फासीवादी ताकतों के जुल्म और अत्याचार के खिलाफ सक्रिय होकर कदम बढ़ावे!**
- **नव जनवादी क्रांति, नव जनवादी संस्कृति जिंदाबाद!**

क्रांतिकारी अभिवादनों के साथ

अभय

Abhay

प्रवक्ता, केन्द्र कमेटी

भारत की कम्युनिस्ट पार्टी (माओवादी)